unacademy

2 chapters

1. ईश्वर से अनुसार
2. भक्ति और सूफ़ी आंदोलन

unacademy

सूफ़ी काव्य

* सूफ़ीवाद शब्द **19वीं शताब्दी** मे **अंग्रेजी** का शब्द है।
* इस्लामी ग्रन्थ में सूफ़ीवाद के लिए **तसव्वुफ़** शब्द का प्रयोग किया जाता है।
* सूफ़ी काव्यधारा को डॉ गणपति चन्द्र गुप्त ने **रोमांटिक कथा काव्य परम्परा** कहा है।

* इस्लाम धर्म में साधारणतः दो सम्प्रदाय हैं- **शरा** और **बेशरा**

शरा-

बेशरा-

सूफ़ी कवियों की विशेषता-

* यह निर्गुण भक्ति धारा है।
* प्रकृति का रागात्मक चित्रण।
* सूफ़ी काव्य का मूलभाव प्रेम है।
* विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।
* इन्होंने **मसनबी शैली** का प्रयोग किया।
* इस धारा के अधिकांश कवि मुस्लिम हैं।
* ये कवि ईश्वर को अपनी प्रेमिका मानते हैं।
* इनमें रचनाओं में प्रेम रहस्यवाद का रूप है।
* भाषा- अवधी, शैली- कड़वक (प्रथम प्रयोग)
* इनमें प्रेम और संगीत का महत्त्व अत्यधिक है।
* इन्होंने हिन्दुओं की कथाओं को आधार बनाया।
* इन कवियों को हृदयवादी या प्रेमाश्रयी काव्यधारा कहते हैं।

सूफ़ियों का आगमन-

* भारत में सूफ़ियों का आगमन मुस्लिम धर्म के आक्रमण के कारण हुआ।
* भारत में तीन चरणों में मुस्लिम आक्रमण हुये।

1. 712 में मो. बिन कासिम
2. 1178 में महमूद गजनवी
3. 1192 & 1197 में मो. गोरी → मो. गोरी → दिल्ली सल्तनत (1206 - 1526)

मुइनीउद्दीन चिश्ती → मुस्लिम सन्त

सूफ़ियों में सिलसिले-

सिलसिला शब्द शाब्दिक अर्थ होता है रिश्ता। अर्थात् इस्लाम धर्म में पैगम्बर, पीर और मुरीद का रिश्ता सिलसिला कहलाता है। सूफ़ियों में कुल मिलाकर 21 सिलसिले हुये परन्तु साहित्य की दृष्टि से इनमें से 4 सिलसिले ही महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

Trick ⇒ 1 चश्मा 2 एक 3 कान पर

प्रमुख सूफी सिलसिले-

समय	सिलसिला	प्रवर्तक	भारत में प्रसार
12 वीं शती	चिश्ती सिलसिला	इसहाक शामी	मुइनुद्दीन चिश्ती
13 वीं शती	सुहरावर्दी सिलसिला	शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	बहाउद्दीन जक़ारिया
15 वीं शती	क़ादिरी सिलसिला	अब्दुल क़ादिर जिलानी	मौहम्मद गौस
16वीं शती	नक्शबदी सिलसिला	अहमद फ़ारुखी	बाकी बिल्लाह बेरंग

चिश्ती सम्प्रदाय → साबिरी, निज़ामी

unacademy

▲ 1 • Asked by Keshav

song

भारत में सूफी गुरु व शिष्यों का क्रम

TRICK → काका चाचा फिर निजाम से खुश हुये

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

काकी चिश्ती फरीद निजामुद्दीन खुसरो

सूफ़ी काव्य

भारत में सूफ़ी गुरुओं का क्रम- 1 2 3 4 5 (काका चाचा फिर निजाम से खुश हुये)

- **कुतुबद्दीन बख्तियार काकी** (कुतुबद्दीन ऐबक के गुरु)
- **शेख मुइनुद्दीन चिश्ती** (चिश्ती सम्प्रदाय के जनक)
- **फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर** (पंजाब के क्षेत्र में प्रचार)
- **निजामुद्दीन औलिया** (ग्यासुद्दीन तुगलक)
- **अमीर खुसरो** (खड़ी बोली के जनक)

सूफ़ी शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई, इस विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं-

* **सफ़ा-** चबूतरा (पैगम्बर की मस्जिद के बाहर)
* **सफ़ा** - पवित्रता से जीवन जीने वाले
* **सूफ़ा-** अरब में रहने वाली जनजाति
* **सुफ़्फ़ाह-** विशेष भक्त
* **सूफ़-** ऊन के कपड़े

सोफ़िस्त – यूनानी
सोफ़िया – विद्या
सफ़ – पंक्ति

सूफ़ी मत का धार्मिक दर्शन- सूफ़ी मत में साधनापूर्ण जीवन को एक सफर मानकर साधना की चार मंजिलें मानी हैं। (4) जीवन या संसार

* इन मंजिलों का उल्लेख जयसी ने पद्मावत में किया है- **चार बसेरों से चढ़े, सत से उतरे पार।**

* डॉ रामकुमार वर्मा के अनुसार ये चार मंजिल निम्न हैं-

मंजिल →	अवस्था →
शरीअत (आचरण)	नासूत → कुरान के नियमों का पालन
तरीक़त (उपासना)	मलकूत → भौतिकता से ऊपर उठकर प्राप्ति
हक़ीकत (सत्यबोध)	जबरूत → ईश्वर के निकट
मारिफ़त (सिद्धावस्था)	लाहूत → ईश्वर प्राप्ति, ब्रह्मलीन

unacademy

लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के *वचन* और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के *अभंगों* ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा। इस माध्यम से इस्लाम दक्कन के गाँवों में जगह पाने में सफल हुआ।

7.4 सूफ़ी और राज्य

चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था। किंतु इसका मतलब यह नहीं था कि राजनीतिक सत्ता से अलगाव का भाव रखा जाए। सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफी संत उसे स्वीकार करते थे। सुल्तानों ने ख़ानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी और दान संबंधी न्यास स्थापित किए।

चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे *समा* की महफ़िलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे। इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था। सूफ़ी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था। इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।

शासक न केवल सूफ़ी संतों से संपर्क रखना चाहते थे अपितु उनके समर्थन के भी कायल थे। जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो *उलमा* द्वारा *शरिया* लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया। सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है। ऐसे समय सुल्तानों ने सूफ़ी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे और उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं। शायद इसलिए शासक अपनी कब्र सूफ़ी दरगाहों और ख़ानक़ाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।

सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं। अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे झुक कर प्रणाम और कदम चूमना। कभी-कभी सूफ़ी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था। उदाहरणत:, शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें *सुल्तान-उल-मशेख* (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

सूफ़ी और राज्य

कुछ अन्य सूफ़ी भी, जैसे कि दिल्ली सल्तनत के युग में सुहरावर्दी और मुग़लयुगीन नक्शबंदी, राज्य से जुड़े रहे। लेकिन उनके जुड़ाव के तरीक़े चिश्तियों से भिन्न थे। कभी-कभी सूफ़ी दरबारी पद भी स्वीकार कर लेते थे।

© NCERT not to be republished

unacademy

स्रोत 9

शाही भेंट अस्वीकार

यह उद्धरण सूफ़ी ग्रंथ से है जो शेख निज़ामुद्दीन औलिया की ख़ानक़ाह में 1313 में हुई घटना का वर्णन करता है :

मेरी (अमीर हसन सिजज़ी) अच्छी किस्मत थी कि मैं उनके (निज़ामुद्दीन औलिया) कदम चूम सका... इस समय एक स्थानीय शासक ने दो बगीचे और बहुत सी ज़मीन का पट्टा शेख साहब को भेजा है। साथ ही इनके रखरखाव के लिए औज़ार व आवश्यक वस्तुएँ भेजी हैं। शासक ने यह भी साफ किया है कि वह बगीचों और ज़मीन पर अपना हक कहते हैं: "इस ज़मीन, खेत और बगीचे का मुझे क्या करना है?... हमारे कोई भी आध्यात्मिक गुरु ने इस तरह का काम नहीं किया।"

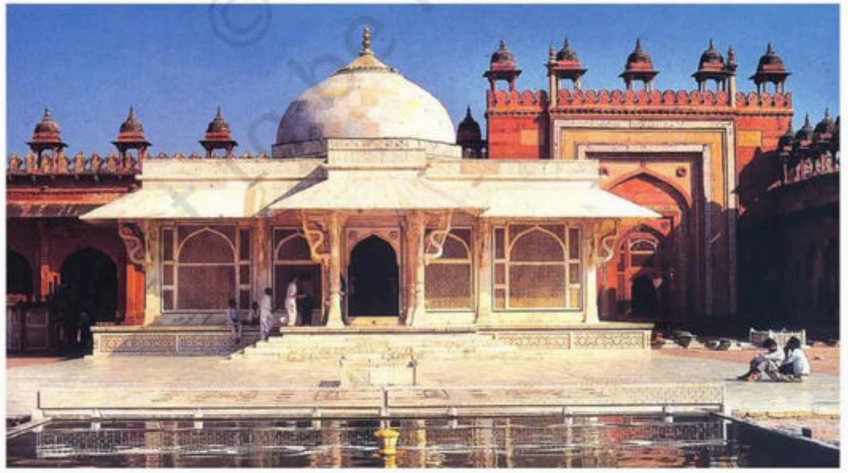
फिर उन्होंने एक उचित कहानी सुनाई "...सुल्तान ग़ियासुद्दीन जो उस समय उलुग़ ख़ान के नाम से जाने जाते थे, शेख फ़रीदुद्दीन से मिलने आए। उन्होंने शेख को कुछ धनराशि और चार गाँवों का पट्टा भेंट किया। धन दरवेशों के लिए था और ज़मीन शेख के अपने इस्तेमाल के लिए थी। मुस्कुराते हुए शेख-अल-इस्लाम (फ़रीदुद्दीन) ने कहा: मुझे धन दे दो मैं इसे दरवेशों में बाँट दूँगा, पर जहाँ तक ज़मीन के पट्टे का सवाल है उसे उन लोगों को दे दो जिन्हें उनकी कामना है....।"

➲ चर्चा कीजिए...

धार्मिक और राजनीतिक नेताओं में टकराव के संभावित स्रोत क्या-क्या हैं?

➲ सूफ़ियों और राज्य के बीच संबंध का कौन सा पहलू इस कहानी से स्पष्ट होता है? यह किस्सा हमें शेख और उनके अनुयायियों के बीच संपर्क के तरीकों के बारे में क्या बताता है?

चित्र 6.15
अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी में बाबा फरीद के वंशज, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह। यह दरगाह चिश्तियों और मुग़ल राज्य के घनिष्ठ संबंधों का प्रतीक थी।



© NCERT not to be republished

unacademy



चित्र 6.6
कुरान शरीफ़ के एक पृष्ठ का हिस्सा। यह आठवीं अथवा नवीं शताब्दी की किसी पांडुलिपि से लिया गया है।

बढ़ रहा था। नगरीय केंद्रों के विस्तार तथा मध्य व पश्चिमी एशिया के साथ व्यापार के प्रसार के साथ ही इन दस्तकारी की वस्तुओं की माँग बढ़ी।

अनेक नवीन धार्मिक नेताओं ने वेदों की सत्ता को चुनौती दी और अपने विचार आम लोगों की भाषा में सामने रखे। समय के साथ यह भाषाएँ उस रूप में विकसित हुईं जिस तरह आज भी प्रयोग में लाई जाती हैं। अपनी लोकप्रियता के बावजूद नवीन धार्मिक नेता विशिष्ट शासक वर्ग का प्रश्रय हासिल करने की स्थिति में नहीं थे।

इस स्थिति में एक नवीन तत्व भारत में तुर्कों का आगमन था जिसकी पराकाष्ठा दिल्ली सल्तनत (तेरहवीं शताब्दी) की स्थापना में हुई। सल्तनत की स्थापना से राजपूत राज्यों का और उनसे जुड़े ब्राह्मणों का पराभव हुआ। इन परिवर्तनों का प्रभाव संस्कृति और धर्म पर भी पड़ा। सूफ़ियों का आगमन (अनुभाग 6) इन परिवर्तनों का एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

5. दुशाले के नए ताने-बाने : इस्लामी परंपराएँ

जिस तरह उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्र एक दूसरे से पृथक नहीं थे उसी भाँति समुद्र और पहाड़ों के परे के क्षेत्रों से भी संपर्क शताब्दियों से बना रहा। प्रथम सहस्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुद्र के रास्ते पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए। इसी समय मध्य एशिया से लोग देश के उत्तर-पश्चिम प्रांतों में आकर बस गए। सातवीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद ये क्षेत्र उस संसार का हिस्सा बन गए जिसे अकसर इस्लामी विश्व कहा जाता है।

5.1 शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास

उलमा (आलिम का बहुवचन) इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे। इस परिपाटी के संरक्षक होने के नाते वे धार्मिक, कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

इन संपर्कों को समझने की एक धुरी यह है कि विशिष्ट शासक वर्ग के धर्म पर दृष्टि डाली जाए। 711 ईसवी में मुहम्मद बिन कासिम नाम के एक अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया और उसे खलीफ़ा के क्षेत्र में शामिल कर लिया। बाद में (लगभग तेरहवीं शताब्दी ईसवी) तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सल्तनत की सीमा का प्रसार हुआ। बहुत से क्षेत्रों में इस्लाम शासकों का स्वीकृत धर्म था। यह स्थिति सोलहवीं शताब्दी में मुगल सल्तनत की स्थापना के साथ भी बरकरार रही। अठारहवीं शताब्दी में जो क्षेत्रीय राज्य उभर कर आए उनमें से कई राज्यों के शासक भी इस्लाम धर्म को मानने वाले थे।

© NCERT not to be republished

unacademy

सैद्धांतिक रूप से मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था। उलमा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे शासन में शरिया का अमल सुनिश्चित करवाएँगे। किंतु उपमहाद्वीप में स्थिति जटिल थी क्योंकि बड़ी जनसंख्या इस्लाम धर्म को मानने वाली नहीं थी।

इस संदर्भ में *ज़िम्मी* (व्युत्पत्ति अरबी शब्द *ज़िम्मा* से) अर्थात संरक्षित श्रेणी का प्रादुर्भाव हुआ। ज़िम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रंथ को मानने वाले थे जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग *जज़िया* नामक कर चुका कर मुसलमान शासकों द्वारा संरक्षण दिए जाने के अधिकारी हो जाते थे। भारत में इसके अंतर्गत हिंदुओं को भी शामिल कर लिया गया। जैसा आप देखेंगे (अध्याय 9), मुगल शासक अपने आपको न केवल मुसलमानों का अपितु सारे समुदायों का बादशाह मानते थे।

वास्तव में शासक शासितों की तरफ़ काफ़ी लचीली नीति अपनाते थे। उदाहरणत:, बहुत से शासकों ने भूमि अनुदान व कर की छूट हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई और यहूदी धर्मसंस्थाओं को दी तथा साथ ही गैर-मुसलमान धार्मिक नेताओं के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त किया। ऐसे अनुदान, अनेक मुगल बादशाहों जिनमें अकबर और औरंगज़ेब शामिल थे, द्वारा दिए गए।

स्रोत 5

खम्बात का गिरजाघर

यह उद्धरण उस फ़रमान (बादशाह के हुक्मनामे) का अंश है जिसे 1598 में अकबर ने जारी किया :

हमारे बुलंद और मुकद्दस (पवित्र) ज़ेहन में पहुँचा है कि यीशु की मुकद्दस जमात के पादरी खम्बायत गुजरात के शहर में इबादत के लिए (गिरजाघर) एक इमारत की तामीर (निर्माण) करना चाहते हैं; इसलिए यह शाही फ़रमान.... जारी किया जा रहा है.... खम्बायत के महानुभाव किसी भी तरह उनके रास्ते में न आएँ और उन्हें गिरजाघर की तामीर करने दें जिससे वे अपनी इबादत कर सकें। यह ज़रूरी है कि बादशाह के इस फ़रमान की हर तरह से तामील (पालन) हो।

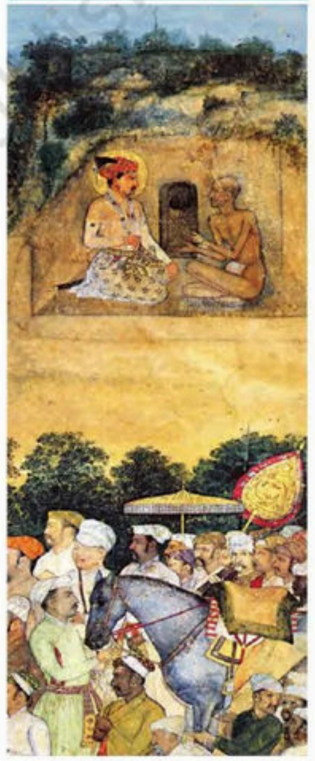
➲ वे कौन लोग थे जिनकी तरफ़ से अकबर को अपने फ़रमान की बेअदबी का अंदेशा था?

चित्र 6.7
बादशाह जहाँगीर तथा एक जोगी को दर्शाता हुआ मुगल चित्र।

शरिया

शरिया मुसलमान समुदाय को निर्देशित करने वाला कानून है। यह कुरान शरीफ़ और हदीस पर आधारित है। हदीस का अर्थ है पैगम्बर साहब से जुड़ी परंपराएँ जिनके अंतर्गत उनके स्मृत शब्द और क्रियाकलाप भी आते हैं।

जब अरब क्षेत्र से बाहर इस्लाम का प्रसार हुआ जहाँ के आचार-व्यवहार भिन्न थे तो क़ियास (सदृशता के आधार पर तर्क) और इजमा (समुदाय की सहमति) को भी कानून का स्रोत माना जाने लगा। इस तरह शरिया, कुरान, हदीस, क़ियास और इजमा से उद्भूत हुआ।



© NCERT not to be republished

unacademy

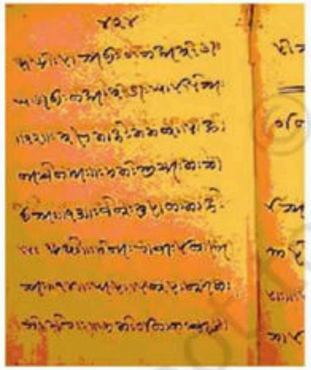
स्रोत 6

जोगी के प्रति श्रद्धा

यह उद्धरण 1661-62 में औरंगज़ेब द्वारा एक जोगी को लिखे पत्र का अंश है :

बुलंद मकाम शिवमूरत गुरु आनंद नाथ जियो!
जनाब-ए-मुहतरम (श्रद्धेय) अमन और खुशी से हमेशा श्री शिव जियो की पनाह में रहें!
पोशाक के लिए वस्त्र और पच्चीस रुपए की रकम जो भेंट के तौर पर भेजी गई है आप तक पहुँचेगी... जनाब-ए-मुहतरम आप हमें लिख सकते हैं जब भी हमारी मदद की जरूरत हो।

➲ जोगी द्वारा वंदनीय देवता की पहचान कीजिए। जोगी के प्रति बादशाह के रवैये का वर्णन कीजिए।



चित्र 6.8
एक खोजकी पाण्डुलिपि।
खोजकी लिपि में लिपिबद्ध करने से पहले जीनन का मौखिक प्रेषण होता था। खोजकी लिपि स्थानीय लंडा (व्यापारियों की संक्षिप्त लिपि) से निकली है। पंजाब, सिंध और गुजरात के खोजा लोग, सभी लंडा का प्रयोग करते थे।

5.2 लोक प्रचलन में इस्लाम

इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए वे शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदराज तक और विभिन्न सामाजिक समुदायों–किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी के बीच फैल गए। जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसकी पाँच मुख्य 'बातें' मानीं : अल्लाह एकमात्र ईश्वर है; पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत (शाहद) हैं; दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जानी चाहिए; खैरात (ज़कात) बाँटनी चाहिए; रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना चाहिए और हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

किंतु इन सार्वभौमिक तत्वों में अकसर सांप्रदायिक (शिया, सुन्नी) वजहों से तथा स्थानीय लोकाचारों के प्रभाव की वजह से भी धर्मांतरित लोगों के व्यवहारों में भिन्नता देखने में आती थी। उदाहरणत:, खोजा इस्माइली (शिया) समुदाय के लोगों ने कुरान के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए देशी साहित्यिक विधा का सहारा लिया। *जीनन* (व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द ज्ञान से) नाम से भक्ति गीत, जो राग में निबद्ध थे, पंजाबी, मुल्तानी, सिंधी, कच्छी, हिंदी और गुजराती में दैनिक प्रार्थना के दौरान गाए जाते थे।

इसके अलावा अरब मुसलमान व्यापारी जो मालाबार तट (केरल) के किनारे बसे, उन्होंने न केवल स्थानीय मलयालम भाषा को अपनाया अपितु स्थानीय आचारों जैसे *मातृकुलीयता* (अध्याय 3) और *मातृगृहता* को भी अपनाया।

© NCERT not to be republished

unacademy

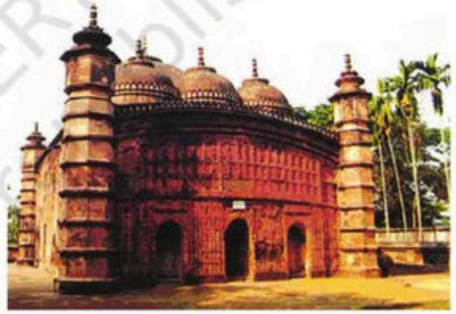
एक सार्वभौमिक धर्म के स्थानीय आचारों के संग जटिल मिश्रण का सर्वोत्तम उदाहरण संभवत: मस्जिदों की स्थापत्य कला में दृष्टिगोचर होता है। मस्जिदों के कुछ स्थापत्य संबंधी तत्व सार्वभौमिक थे–जैसे



चित्र 6.9
केरल में तेहरवीं शताब्दी की एक मस्जिद। इसके शिखर के आकार की छत पर गौर कीजिए।

इमारत का मक्का की तरफ़ अनुस्थापन जो *मेहराब* (प्रार्थना का आला) और मिम्बर (व्यासपीठ) की स्थापना से लक्षित होता था। बहुत से तत्व ऐसे थे जिनमें भिन्नता देखने में आती है जैसे छत और निर्माण का सामान। (देखिए चित्र 6.9, 6.10 और 6.11)

मातृगृहता वह परिपाटी है जहाँ स्त्रियाँ विवाह के बाद अपने मायके में ही अपनी संतान के साथ रहती हैं और उनके पति उनके साथ आकर रह सकते हैं।



चित्र 6.10
ईंटों की बनी अतिया मस्जिद, 1609, जिला मैमनसिंग, बांग्लादेश।

5.3 समुदायों के नाम

हम अधिकतर हिंदू और मुसलमान जैसे शब्दों को धार्मिक समुदायों का निश्चित द्योतक मान लेते हैं। किंतु सच तो यह है कि इन शब्दों का बहुत समय तक कोई प्रचलन नहीं था। जिन इतिहासकारों ने आठवीं से चौहदवीं शताब्दी के मध्य संस्कृत ग्रंथों और अभिलेखों का अध्ययन किया है वे इस तथ्य को उजागर करते हैं कि इनमें मुसलमान, शब्द का शायद ही कहीं प्रयोग हुआ हो। इसके विपरीत लोगों का वर्गीकरण उनके जन्मस्थान के आधार पर किया जाता था। इस तरह तुर्की मुसलमानों को तुरुष्क कहा गया। तजाकिस्तान से आए लोगों को ताजिक और फारस के लोगों को पारसीक नाम से संबोधित किया गया। यदा-कदा अन्य लोगों को दिए गए नामों को नए प्रवासियों के साथ भी जोड़ा गया। उदाहरणत:, तुर्क और अफ़गानों को शक (अध्याय 2 व 3) और यवन (ग्रीक लोगों के लिए प्रयुक्त) भी कहा गया।

इन प्रवासी समुदायों के लिए एक अधिक सामान्य शब्द म्लेच्छ था जो इस बात की ओर इंगित करता है कि वह वर्ण नियमों का पालन नहीं

© NCERT not to be republished

unacademy



चित्र 6.11
श्रीनगर की झेलम नदी के किनारे बनी शाह हमदान मस्जिद कश्मीर की सभी मस्जिदों में 'मुकुट का नगीना' समझी जाती है।
इसका निर्माण 1395 में हुआ और यह कश्मीरी लकड़ी की स्थापत्य कला का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसके शिखर और नक्काशीदार छज्जे पर गौर कीजिए। यह पेपरमैशी से सजाई गई है।

करते थे और ऐसी भाषाएँ बोलते थे जो संस्कृत से नहीं उपजी थीं। हालाँकि ऐसे शब्दों में हीनभावना निहित थी किंतु उन्हें एक ऐसे विशिष्ट मुसलमान धार्मिक समुदाय के लिए शायद ही प्रयुक्त किया जाता था जो हिंदू समुदाय के विपक्ष में हों। जैसाकि हमने अध्याय 5 में देखा कि 'हिंदू' शब्द अनेक तरह से इस्तेमाल किया जाता था और उसे धार्मिक समुदाय के एकमात्र अर्थ में सीमित नहीं किया जा सकता।

➲ चर्चा कीजिए...

अपने गाँव अथवा शहर की मस्जिद की स्थापत्य कला के बारे में जानकारी हासिल कीजिए। इसे बनाने में किस तरह की सामग्री का इस्तेमाल हुआ है? क्या यह सामग्री स्थानीय स्तर पर मिलती है? क्या इसके कुछ विशिष्ट स्थापत्य लक्षण हैं?

6. सूफ़ीमत का विकास

इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में धार्मिक और राजनीतिक संस्था के रूप में खिलाफ़त की बढ़ती विषयशक्ति के विरुद्ध कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफ़ी कहा जाने लगा। इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और *सुन्ना* (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। इसके विपरीत उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया। उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी। सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

6.1 ख़ानक़ाह और सिलसिला

ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफ़ीवाद एक पूर्ण विकसित आंदोलन था जिसका सूफ़ी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था। संस्थागत दृष्टि से सूफ़ी अपने को एक संगठित समुदाय-ख़ानक़ाह (फारसी) के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे। ख़ानक़ाह का नियंत्रण शेख (अरबी), पीर अथवा मुर्शीद (फारसी) के हाथ में था। वे अनुयायियों (मुरीदों) की भरती करते थे और अपने वारिस (खलीफ़ा) की नियुक्ति करते थे। आध्यात्मिक व्यवहार के नियम निर्धारित करने के अलावा ख़ानक़ाह में रहने वालों के बीच के संबंध और शेख व जनसामान्य के बीच के रिश्तों की सीमा भी नियत करते थे।

सूफ़ीवाद और *तसव्वुफ*

सूफ़ीवाद उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रित एक अंग्रेजी शब्द है। इस सूफ़ीवाद के लिए इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का इस्तेमाल होता है वह है *तसव्वुफ़*। कुछ विद्वानों के अनुसार यह शब्द 'सूफ़' से निकलता है जिसका अर्थ ऊन है। यह उस खुरदुरे ऊनी कपड़े की ओर इशारा करता है जिसे सूफ़ी पहनते थे। अन्य विद्वान इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' से मानते हैं जिसका अर्थ है साफ़। यह भी संभव है कि यह शब्द 'सफ़्फ़ा' से निकला हो जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ निकट अनुयायियों की मंडली धर्म के बारे में जानने के लिए इकट्ठी होती थी।

© NCERT not to be republished

unacademy

बारहवीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया में सूफ़ी सिलसिलों का गठन होने लगा। सिलसिला का शाब्दिक अर्थ है जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की द्योतक है, जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है। इस कड़ी के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद मुरीदों तक पहुँचता था। दीक्षा के विशिष्ट अनुष्ठान विकसित किए गए जिसमें दीक्षित को निष्ठा का वचन देना होता था, और सिर मुँड़ाकर थेगड़ी लगे वस्त्र धारण करने पड़ते थे।

पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह (फारसी में इसका अर्थ दरबार) उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी। इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की, खासतौर से उनकी बरसी के अवसर पर, परिपाटी चल निकली। इस परिपाटी को *उर्स* (विवाह, मायने पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था क्योंकि लोगों का मानना था कि मृत्यु के बाद पीर ईश्वर से एकीभूत हो जाते हैं और इस तरह पहले के बजाय उनके अधिक करीब हो जाते हैं। लोग आध्यात्मिक और ऐहिक कामनाओं की पूर्ति के लिए उनका आशीर्वाद लेने जाते थे। इस तरह शेख का वली के रूप में आदर करने की परिपाटी शुरू हुई।

6.2 ख़ानक़ाह के बाहर

कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी। ख़ानक़ाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फकीर की जिंदगी बिताते थे। निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था- कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि। शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे-शरिया कहा जाता था। इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग करके देखा जाता था।

7. उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफ़ी समुदायों में चिश्ती सबसे अधिक प्रभावशाली रहे। इसका कारण यह था कि उन्होंने न केवल अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला अपितु भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

7.1 चिश्ती ख़ानक़ाह में जीवन

ख़ानक़ाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु था। हमें शेख निज़ामुद्दीन औलिया (चौदहवीं शताब्दी) की ख़ानक़ाह के बारे में पता है जो उस समय के दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे ग़ियासपुर में था। यहाँ कई छोटे-छोटे कमरे और एक बड़ा हाल (जमातख़ाना) था जहाँ सहवासी और अतिथि रहते, और उपासना करते थे। सहवासियों में शेख का अपना परिवार, सेवक और अनुयायी थे।

सिलसिलों के नाम

ज्यादातर सूफ़ी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।

वली (बहुवचन औलिया) अर्थात ईश्वर का मित्र वह सूफ़ी जो अल्लाह के नज़दीक होने का दावा करता था और उनसे मिली बरकत से करामात करने की शक्ति रखता था।

➲ चर्चा कीजिए...

क्या आपके गाँव अथवा शहर में ख़ानक़ाह या दरगाह है? मालूम कीजिए इनकी स्थापना कब हुई थी तथा इनके संग कौन से क्रियाकलाप जुड़े हुए हैं? क्या ऐसे अन्य स्थान हैं जहाँ धार्मिक स्त्री और पुरुष मिलते और रहते हैं?

© NCERT not to be republished

unacademy

शेख एक छोटे कमरे में छत पर रहते थे जहाँ वह मेहमानों से सुबह-शाम मिला करते थे। आँगन एक गलियारे से घिरा होता था और ख़ानक़ाह को चारों ओर से दीवार घेरे रहती थी। एक बार मंगोल आक्रमण के समय पड़ोसी क्षेत्र के लोगों ने ख़ानक़ाह में शरण ली।

चिश्ती सिलसिला के मुख्य उपदेशक

सूफ़ी	मृत्यु का वर्ष	दरगाह का स्थान
शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	1235	अजमेर (राजस्थान)
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी	1235	दिल्ली
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	1265	अजोधन (पाकिस्तान)
शेख निज़ामुद्दीन औलिया	1325	दिल्ली
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली	1356	दिल्ली

दाता गंज बख्श की कहानी

1039 ईसवी में अबुल हसन अल हुजविरी जो अफगानिस्तान के शहर गज़नी के निकट हुजविर के रहने वाले थे, उन्हें तुर्की सेना के एक कैदी के रूप में सिंधु नदी पार करनी पड़ी। वह लाहौर में बस गए और फारसी में उन्होंने एक किताब लिखी *कश्फ-उल-महजूब* (परदे वाले की बेपर्दगी) जिसमें तसव्वुफ़ के मायने और इसका पालन करने वाले सूफ़ियों के बारे में बताया गया था।

हुजविरी की 1073 में मृत्यु हो गई और उन्हें लाहौर में दफ़नाया गया। सुल्तान महमूद गज़नी के पोते ने उनकी मज़ार पर दरगाह बनवाई। यह दरगाह उनकी बरसी के अवसर पर उनके अनुयायियों के लिए तीर्थ स्थल बन गई।

आज भी हुजविरी दाता गंज बख्श के रूप में आदरणीय हैं और उनकी दरगाह को दाता दरबार यानी देने वाले की दरगाह कहा जाता है।

यहाँ एक सामुदायिक रसोई (लंगर) फ़ुतूह (बिना माँगी खैर) पर चलती थी। सुबह से देर रात तक सब तबके के लोग–सिपाही, गुलाम, गायक, व्यापारी, कवि, राहगीर, धनी और निर्धन, हिंदू जोगी और कलंदर यहाँ अनुयायी बनने, इबादत करने, ताबीज लेने अथवा विभिन्न मसलों पर शेख की मध्यस्थता के लिए आते थे। कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन सिजज़ी और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी जैसे लोग शामिल थे। इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा। शेख के सामने झुकना, मिलने वालों को पानी पिलाना, दीक्षितों के सर का मुंडन तथा यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के द्योतक हैं कि स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया।

शेख निज़ामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में ख़ानक़ाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया। इस वजह से चिश्तियों के उपदेश, व्यवहार और संस्थाएँ तथा शेख का यश चारों ओर फैल गया। उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

7.2 चिश्ती उपासना : ज़ियारत और कव्वाली

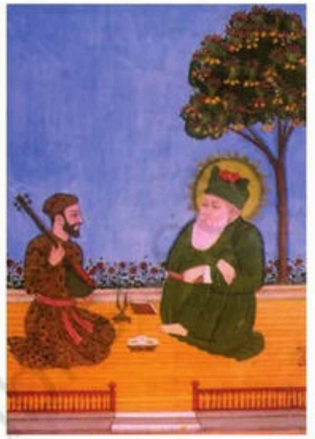
सूफ़ी संतों की दरगाह पर की गई ज़ियारत सारे इस्लामी संसार में प्रचलित है। इस अवसर पर संत के आध्यात्मिक आशीर्वाद यानी बरकत की कामना की जाती है। पिछले सात सौ सालों से अलग-अलग संप्रदायों, वर्गों और समुदायों के लोग पाँच महान चिश्ती संतों की दरगाह पर अपनी आस्था प्रकट करते रहे हैं (ऊपर दिया गया चार्ट देखिए) इनमें सबसे अधिक पूजनीय दरगाह ख़्वाजा मुइनुद्दीन की है जिन्हें 'ग़रीब नवाज़' कहा जाता है।

© NCERT not to be republished

unacademy

ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह का सबसे पहला किताबी ज़िक्र चौदहवीं शताब्दी का है। यह दरगाह शेख की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और राजसी मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी। मुहम्मद बिन तुगलक (1324–51) पहला सुल्तान था जो इस दरगाह पर आया था किंतु शेख की मज़ार पर सबसे पहली इमारत मालवा के सुल्तान गियासुद्दीन खलजी ने पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनवाई। चूँकि यह दरगाह दिल्ली और गुजरात को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग पर थी अतः अनेक यात्री यहाँ आते थे।

सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते अजमेर की यह दरगाह बहुत ही लोकप्रिय हो गई थी। इस दरगाह को जानने वाले तीर्थयात्रियों के भजनों ने ही अकबर को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया। अकबर यहाँ चौदह बार आया कभी तो साल में दो-तीन बार, कभी नयी जीत के लिए आशीर्वाद लेने अथवा संकल्प की पूर्ति पर या फिर पुत्रों के जन्म पर।



चित्र 6.12
शेख निज़ामुद्दीन औलिया और उनके शिष्य अमीर खुसरो का सत्रहवीं शताब्दी का एक चित्र।

➲ यह बताइए कि कलाकार शेख साहब और उनके शिष्य में कैसे फर्क डालता है?



चित्र 6.13
अजमेर की तीर्थ यात्रा पर बादशाह जहाँगीर का स्वागत करते हुए शेख। मनोहर नामक कलाकार का चित्र, लगभग 1615

➲ चित्र में कलाकार के हस्ताक्षर ढूँढ़िए।

© NCERT not to be republished

unacademy

मुल्क का चिराग

प्रत्येक सूफी दरगाह के कुछ विशिष्ट लक्षण होते थे। अठारहवीं शताब्दी में दक्कन के दरगाह कुली खान ने शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली की दरगाह के बारे में मुरक्का-ए-देहली (दिल्ली की अलबम) में लिखा कि–

> शेख सिर्फ देहली के ही चिराग नहीं अपितु सारे मुल्क के चिराग हैं। लोगों का हुजूम यहाँ आता है खासतौर से इतवार के रोज। दीवाली के महीने में दिल्ली की सारी आबादी दरगाह पर उमड़ आती है और हौज के पास तम्बू गाड़ कर वे कई दिनों तक यहाँ रहते हैं। पुराने रोगों को ठीक करने के लिए वे यहाँ नहाते हैं। हिंदू और मुसलमान एक ही भावना से आते हैं। सुबह से शाम तक लोग आते हैं और पेड़ की छाँव में हँसी-खुशी में समय बिताते हैं।

स्रोत 7

मुगल शहज़ादी जहाँआरा की तीर्थयात्रा 1643

निम्नलिखित गद्यांश जहाँआरा द्वारा रचित शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी *मुनिस-अल-अख्वाह* (यानी आत्मा का विश्वस्त) से लिया गया है।

> अल्लाहताला की तारीफ़ के बाद.... यह फकीरा जहाँआरा... राजधानी आगरा से अपने पिता (बादशाह शाहजहाँ) के संग पाक और बेजोड़ अजमेर के लिए निकली.... मैं इस बात के लिए वायदापरस्त थी कि हर रोज और हर मुकाम पर मैं दो बार की अख़्तियारी नमाज अदा करूँगी... बहुत दिन... मैं रात को बाघ के चमड़े पर नहीं सोई और अपने पैर मुकद्दस दरगाह की तरफ नहीं फैलाए, न ही मैंने अपनी पीठ उनकी तरफ की। मैं पेड़ के नीचे दिन गुजारती थी।
>
> वीरवार को रमज़ान के मुकद्दस महीने के चौथे रोज मुझे चिराग और इत्र में डूबे दरगाह की जियारत की खुशी हासिल हुई... चूँकि दिन की रोशनी की एक छड़ी बाकी थी मैं दरगाह के भीतर गई और अपने जर्द चेहरे को उसकी चौखट की धूल से रगड़ा। दरवाजे से मुकद्दस दरगाह तक मैं नंगे पाँव वहाँ की ज़मीन को चूमती हुई गई। गुम्बद के भीतर रोशनी से भरी दरगाह में मैंने मज़ार के चारों ओर सात फेरे लिए। आख़िर में अपने हाथों से मुकद्दस दरगाह पर मैंने सबसे उम्दा इत्र छिड़का। चूँकि गुलाबी दुपट्टा जो मेरे सिर पर था, मैं उतार चुकी थी इसलिए उसे मैंने मुकद्दस मज़ार के ऊपर रखा।...

➲ जहाँआरा कौन सी चेष्टाओं का ज़िक्र करती हैं जो शेख के प्रति उसकी भक्ति को दर्शाते हैं। दरगाह की खासियत को वह किस तरह दर्शाती है?

उन्होंने यह परंपरा 1580 तक बनाए रखी। प्रत्येक यात्रा पर बादशाह दान-भेंट दिया करते थे, जिनके ब्योरे शाही दस्तावेज़ों में दर्ज हैं। उदाहरण के लिए, 1568 में उन्होंने तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने हेतु एक विशाल देग़ दरगाह को भेंट की। उन्होंने दरगाह के अहाते में एक मस्जिद भी बनवाई।

नाच और संगीत भी ज़ियारत का हिस्सा थे, खासतौर से कव्वालों द्वारा प्रस्तुत रहस्यवादी गुणगान जिससे परमानंद की भावना को उभारा जा सके। सूफ़ी संत ज़िक्र (ईश्वर का नाम-जाप) या फिर समा (श्रवण करना) यानी आध्यात्मिक संगीत की महफिल के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे। चिश्ती उपासना पद्धति में सभा का महत्त्व इस तथ्य की पुष्टि करता है कि चिश्ती स्थानीय भक्ति परंपरा से जुड़ें।

© NCERT not to be republished

unacademy

7.3 भाषा और संपर्क

न केवल सभा में चिश्तियों ने स्थानीय भाषा को अपनाया अपितु दिल्ली में चिश्ती सिलसिले के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे। बाबा फरीद ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो *गुरु ग्रंथ साहिब* में संकलित है। कुछ और सूफ़ियों ने लंबी कविताएँ मसनवी लिखीं जहाँ ईश्वर के प्रति प्रेम को मानवीय प्रेम के रूपक के द्वारा अभिव्यक्त किया गया। उदाहरणत: मलिक मोहम्मद जायसी का प्रेमाख्यान *पद्मावत* पद्मिनी और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रेम कथा के इर्द-गिर्द घूमता है। उनकी आजमाइश प्रतीक है आत्मा की परमात्मा तक पहुँचने की यात्रा का। अक्सर ख़ानक़ाहों में *समा* के दौरान ऐसे काव्यों का वाचन होता था।

सूफ़ी कविता की एक भिन्न विधा की रचना बीजापुर कर्नाटक के आसपास हुई। यह दक्खनी (उर्दू का रूप) में लिखी छोटी कविताएँ थीं जो सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दियों में इस क्षेत्र में बसने वाले चिश्ती संतों द्वारा रची गई थीं। ये रचनाएँ संभवत: औरतों द्वारा घर का काम जैसे चक्की पीसते और चरखा कातते हुए गाई जाती थीं। कुछ और रचनाएँ *लोरीनामा* और *शादीनामा* के रूप में लिखी गईं। यह संभव है कि इस क्षेत्र के सूफ़ी यहाँ पहले से चलती आई भक्ति परंपरा से प्रभावित हुए।

स्रोत 8

चरखानामा

यह गीत चरखे के चलने की धुन पर आधारित है :

जैसे आप रुई लेते हैं,
आप *ज़िक्र-ए-जाली* करें।
जैसे आप रुई को धुनते हैं,
आप *ज़िक्र-ए-कल्बी* करें।
जैसे आप धागे को फिरकी पर लपेटते हैं,
आप *ज़िक्र-ए-आइनी* करें।
ज़िक्र पेट से छाती तक उच्चारित किया जाए।
उसे धागे की तरह गले से उतारें
स्वास के धागे एक-एक गिनें, बहन
चौबीस हज़ार तक गिनें
सुबह-शाम ऐसा करें
और इसे तोहफे में अपने पीर को पेश करें।

अमीर खुसरो और कौल

अमीर खुसरो (1253-1325) महान कवि, संगीतज्ञ तथा शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे। उन्होंने *कौल* (अरबी शब्द जिसका अर्थ है कहावत) का प्रचलन करके चिश्ती *समा* को एक विशिष्ट आकार दिया। कौल को कव्वाली के शुरू और आखिर में गाया जाता था। इसके बाद सूफ़ी कविता का पाठ होता था जो फारसी, हिंदवी अथवा उर्दू में होती थी और कभी-कभी इन तीनों ही भाषाओं के शब्द इसमें मौजूद होते थे। शेख निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर गाने वाले कव्वाल अपने गायन की शुरुआत कौल से करते हैं। उपमहाद्वीप की सभी दरगाहों पर कव्वाली गाई जाती है।



चित्र 6.14
निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह की कव्वाली

➲ इस गाने के विचार और अभिव्यक्ति के तरीके जहाँआरा की *ज़ियारत* (स्रोत 7) में वर्णित विचारों और अभिव्यक्ति के तरीकों से कैसे समान और भिन्न हैं?

unacademy

लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के *वचन* और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के *अभंगों* ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा। इस माध्यम से इस्लाम दक्कन के गाँवों में जगह पाने में सफल हुआ।

7.4 सूफ़ी और राज्य

चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था। किंतु इसका मतलब यह नहीं था कि राजनीतिक सत्ता से अलगाव का भाव रखा जाए। सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफी संत उसे स्वीकार करते थे। सुल्तानों ने ख़ानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी और दान संबंधी न्यास स्थापित किए।

चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे *समा* की महफ़िलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे। इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था। सूफ़ी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था। इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।

शासक न केवल सूफ़ी संतों से संपर्क रखना चाहते थे अपितु उनके समर्थन के भी कायल थे। जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो *उलमा* द्वारा *शरिया* लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया। सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है। ऐसे समय सुल्तानों ने सूफ़ी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे और उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं। शायद इसलिए शासक अपनी कब्र सूफ़ी दरगाहों और ख़ानक़ाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।

सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं। अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे झुक कर प्रणाम और कदम चूमना। कभी-कभी सूफ़ी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था। उदाहरणत:, शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें *सुल्तान-उल-मशेख* (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

सूफ़ी और राज्य

कुछ अन्य सूफ़ी भी, जैसे कि दिल्ली सल्तनत के युग में सुहरावर्दी और मुग़लयुगीन नक्शबंदी, राज्य से जुड़े रहे। लेकिन उनके जुड़ाव के तरीक़े चिश्तियों से भिन्न थे। कभी-कभी सूफ़ी दरबारी पद भी स्वीकार कर लेते थे।

© NCERT not to be republished

unacademy

स्रोत 9

शाही भेंट अस्वीकार

यह उद्धरण सूफ़ी ग्रंथ से है जो शेख निज़ामुद्दीन औलिया की ख़ानक़ाह में 1313 में हुई घटना का वर्णन करता है :

मेरी (अमीर हसन सिजज़ी) अच्छी किस्मत थी कि मैं उनके (निज़ामुद्दीन औलिया) कदम चूम सका... इस समय एक स्थानीय शासक ने दो बगीचे और बहुत सी ज़मीन का पट्टा शेख साहब को भेजा है। साथ ही इनके रखरखाव के लिए औज़ार व आवश्यक वस्तुएँ भेजी हैं। शासक ने यह भी साफ किया है कि वह बगीचों और ज़मीन पर अपना हक कहते हैं: "इस ज़मीन, खेत और बगीचे का मुझे क्या करना है?... हमारे कोई भी आध्यात्मिक गुरु ने इस तरह का काम नहीं किया।"

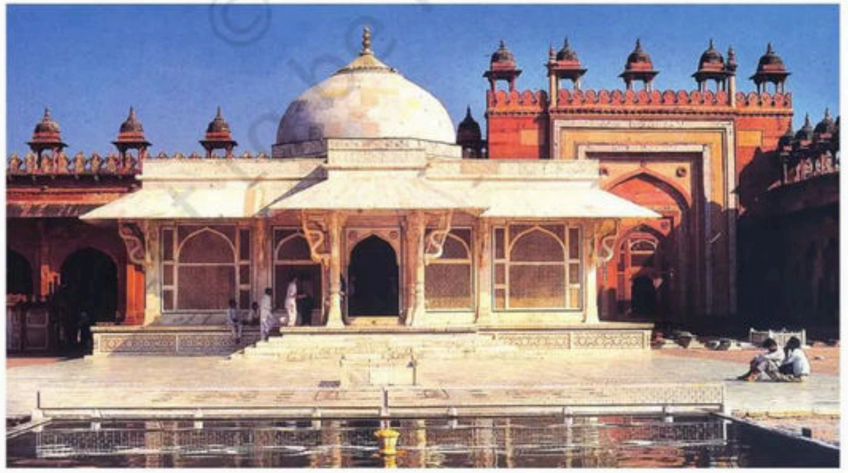
फिर उन्होंने एक उचित कहानी सुनाई "...सुल्तान ग़ियासुद्दीन जो उस समय उलुग़ ख़ान के नाम से जाने जाते थे, शेख फ़रीदुद्दीन से मिलने आए। उन्होंने शेख को कुछ धनराशि और चार गाँवों का पट्टा भेंट किया। धन दरवेशों के लिए था और ज़मीन शेख के अपने इस्तेमाल के लिए थी। मुस्कुराते हुए शेख-अल-इस्लाम (फ़रीदुद्दीन) ने कहा: मुझे धन दे दो मैं इसे दरवेशों में बाँट दूँगा, पर जहाँ तक ज़मीन के पट्टे का सवाल है उसे उन लोगों को दे दो जिन्हें उनकी कामना है....।"

➲ चर्चा कीजिए...

धार्मिक और राजनीतिक नेताओं में टकराव के संभावित स्रोत क्या-क्या हैं?

➲ सूफ़ियों और राज्य के बीच संबंध का कौन सा पहलू इस कहानी से स्पष्ट होता है? यह किस्सा हमें शेख और उनके अनुयायियों के बीच संपर्क के तरीकों के बारे में क्या बताता है?

चित्र 6.15
अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी में बाबा फरीद के वंशज, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह। यह दरगाह चिश्तियों और मुग़ल राज्य के घनिष्ठ संबंधों का प्रतीक थी।



© NCERT not to be republished

* इश्क-ए-मजाजी से इश्क-ए-हक़ीकी तक में चार अवस्थाओं का उल्लेख है-
  नफ़्स (भोगवृत्ति), **रूह** (आत्मा या चित्त), **कल्ब** (हृदय), **अक़्ल** (बुद्धि)

* इस्लाम में ज्ञान के दो प्रकार माने गये हैं-
* **इल्म-ए-सकीना-** अल्लाह ने पैगम्बर से ज्ञान दिलाया
* **इल्म-ए-सीना-** अल्लाह ने सामान्य ज्ञान दिया

* प्रमुख सूफ़ी कवि- लगभग **35**
* प्रमुख सूफ़ी काव्य- लगभग **55**
* सर्वाधिक सूफ़ी प्रेमाख्यानक लिखने वाले कवि- **जान कवि**

प्रथम सूफ़ी रचना- सूफ़ी साहित्य की रचना सिन्ध और पंजाब प्रान्त से आरंभ हुई।
* **हंसावली (असाइत, 1370 ई)-** मोतीलाल मेनारिया → मोती → हंस
* **चन्दायन (मुल्ला दाऊद, 1379 ई)-** डॉ रामकुमार वर्मा → चाँद → रेल
* **सत्यवती कथा (ईश्वरदास, 1501 ई)-** डॉ नगेन्द्र, GC गुप्त, HPD → नगा → सत्य
* **मृगावती (कुतुबन, 1503 ई)-** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल → दिन → रामचन्द्र

सूफ़ी रचनाओं का क्रम- 13

1 2 X 3 4 5 6 7
हँसे चन्दा और कहे मृग, पैरों में मधु के चित्र।
रस ज्ञान से जवाहर, इन्द्र बाँसुरी बजाये युसुफ।
8 9 10 11 12 13

1. हंसावली -1370
2. चन्दायन -1379
3. सत्यवती -1501
4. मृगावती -1503
5. पद्मावत -1540
6. मधुमालती-1545
7. चित्रावली-1613
8. रस रतन -1619
9. नायक -1619
10. हंस जवाहिर -1731
11. इन्द्रावती - 1744
12. अनुराग बाँसुरी-1754
13. युसुफ जुलेखा- 1760

unacademy

प्रमुख सूफ़ी ग्रन्थ-

01- हंसावली (1370 ई)

* **मेतीलाल मेनारिया-** हिन्दी का पहला सूफ़ी काव्य
* रचयिता- असाइत
* भाषा- राजस्थानी
* स्रोत- विक्रम बेताल कथा
* नायिका- पाटण की राजकुमारी हंसावली
* इसमें विचित्र गुफाओं का वर्णन है।
* मोतीलाल मेनारिया इसे राजस्थानी साहित्य मानते हैं।

02- चन्दायन (1379 ई)

* रचियता- मुल्ला दाऊद
* अन्य नाम- लोर कथा या लोरकहा या लोरकयान (कामता प्रसाद गुरु ने)
* भाषा- परिष्कृत अवधी
* नायक- लोरिक
* नायिका- चन्दा (प्रेमिका), मैना (पत्नी)
* पुनर्नवा (HPD) का कथा यहीं से ली गयी है।

03- लखनसेन पद्मावती कथा (1459 ई)

* रचयिता- दामोदर कवि
* अन्य नाम- वीर कथा (कवि द्वारा)
* भाषा- राजस्थानी
* नायक- लखनसेन
* नायिका- पद्मवती

04- सत्यवती कथा (1501 ई)

* रचयिता- ईश्वरदास (जन्म- 1480 ई, सगुण उपासक भक्त कवि)
* नायक- ऋतुपर्ण
* नायिका- सत्यवती
* इसका आरंभ जनमेजय के नागयज्ञ से होता है।
* अन्य रचनायें- भरत मिलाप, अंगद पैज (रामकथा से संबंधित पहला प्रबन्ध काव्य)

05- मृगावती (1503 ई)

* रचयिता- कुतुबन (जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह के दरबारी थे।)
* नायक- गणपति देव (चन्द्रनगर का राजकुमार)
* नायिका- मृगावती, रुक्मणि (कंचनपुर की राजकुमारी)
* कुतुबन के गुरु- शेख बुरहान

06- मधवानल कामकन्दला (1527 ई)

* रचयिता- गणपति कवि
* नायक- माधव
* नायिका- कामकन्दला (नर्तकी)
* भाषा- राजस्थानी
* इसमें केवल दोहा छन्द का प्रयोग किया गया है।
* इस ग्रन्थ के आरंभ में कामदेव की स्तुति की गयी है।

07- पद्मावत (1520 से 1540 ई तक)

* रचयिता- मलिक मौ जायसी (रायबरेली के जायस ग्राम में 1492 से 1542 तक)
* **रामस्वरुप चतुर्वेदी-** हिन्दी का पहला महाकाव्य
* जायसी के गुरु- मुहुउद्दीन, शेख बुरहान
* जायसी की उपाधि- भूमिपुत्र (वासुदेव शरण अग्रवाल)
* इसमें जायसी ने अपने जन्म के बारे में लिखा है-
* रचनाकाल- शेरशाह सूरी
* भाषा- ठेठ अवधी (इसे बच्चन सिंह ने **अवधी का अराधान** कहा है।)
* जायसी जी का प्रिय अलंकार- **हेतुप्रेक्षा** (RCS- वस्तूप्रेक्षा अलंकार की अधिकता)
* इस ग्रन्थ में जायसी जी ने अपनी मृत्यु के संबंध में लिखा है।- **24वाँ खण्ड**
* इस ग्रन्थ में चित्तौढ़ के राजा रतन सिंह और राजकुमारी पद्मावती की कथा है।
* इसमें दो वीर गौरा-बादल की कथा का वर्णन है।
* इसमें बारहमासा का वर्णन **आषाढ़ मास** से आरंभ होता है।
* इसका पूर्वार्द्ध (सिंहल द्वीप) काल्पनिक तथा उत्तरार्द्ध (चित्तौढ़ गढ़) ऐतिहासिक है।
* इसमें कड़वक शैली का प्रयोग किया गया है। (7 चौपाई, 1 दोहा)
* इसका 30वाँ खण्ड नागमति वियोग खण्ड है। (RCS- विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट उदाहरण, हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु)

* पद्मावत में प्रतीक-

मन या आत्मा- रतनसेन
श्रद्ध या बुद्धि- पद्मावती
शैतान- राघव चेतन
हृदय- सिंहल
गुरु- हीरामन तोता
माया- अलाउद्दीन
संसार- नागमती

* **डॉ गणपति चन्द्र गुप्त-** उत्तरार्द्ध के ऐतिहासिक होने के विपक्ष में अनेक अकाट्य प्रमाण श्री इन्द्रचन्द्र नारंग और शिव सहाय पाठक ने दिये हैं।

* **डॉ हरदेव बाहरी-** पद्मावत की कथा रत्नशेखर की कथा से गहरा साम्य रखती है।- **प्राकृत साहित्य का इतिहास**

* **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-** हिन्दी में रमणीय व सुन्दर अद्वैत रहस्यवाद कहीं है तो जायसी में।
  * जायसी को हम विप्रलभ शृंगार का प्रधान कवि कह सकते हैं।
  * पद्मवत रूप लोभ है जो कि भक्तिकाल का वेदवाक्य है।
  * जायसी की प्रेमपीर सारे विश्व की प्रेम-पीर लगती है।
  * पद्मावत हिन्दी साहित्य का जगमगाता रत्न है।
  * जयासी कवि थे और भारतवर्ष के कवि थे।
  * कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया था प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी था वह जायसी द्वारा पूरी हुई।

* **विश्वनाथ त्रिपाठी-** पद्मावत प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद प्रबंध काव्य है।
  * पद्मवत आद्यांत मानुष प्रेम की महिमा को व्यंजित करता है।
  * पद्मवात मध्यदेश की अनेक धार्मिक साधनाओं का रूप प्रस्तुत करता है।

* **डॉ बच्चन सिंह-** सूफ़ी कवियों में एक ही कवि हैं जायसी। शेष कवि लकीर के फ़कीर हैं।

* **विजयदेव नारायण साही-** जयासी कवि पहले हैं सूफ़ी बाद में।
  * पद्मावत अपने ढंग की ट्रेजिडी है।

* **अन्य भाषाओं में पद्मावत-**
* फारसी भाषा- पद्म पद्मावत (अब्दुल शकूर बज़्मी, राय गोविन्द मुंशी)
* उर्दू भाषा- शमा परवाना (आकिल खाँ राजी, गुलाम अली)
* बंगाली भाषा- पद्मिनी उपाख्यान (रंगलाल बंदोपाध्याय)
* बंगाली भाषा- पद्मावती (अलालोल या आलोउजाला, अराकान राज्य के वजीर मगन ठाकुर ने, 1650 ई में)

* **जायसी जी के अन्य ग्रन्थ-**
* **कान्हावत-** श्रीकृष्ण की कथा, पद्मवत जैसी शैली, सूफ़ी मत से अछूती रचना
* **अखरावट-** वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण के आधार पर सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन
* **आखिरी कलाम-** कुरान के आधार पर सृष्टि के अन्त का वर्णन (भूकम्प के द्वारा)
* **कहरनामा-** कहर जाति से संबंधित कथा, उनके लोकगीत कहरवा की लोकधुन पर आधारित
* **चित्ररेखा-** जायसी जी की अन्तिम रचना

08- मधुमालती (1545 ई)
* रचयिता- मंझन कवि
* इसमें नायक-नायिका के अतिरिक्त उपनायक-उपनायिका की कथा भी है।
* नायक-नायिका- मनोहर- मधुमालती
* यह एक सुखान्त प्रेमाख्यानक है।
* इसमें पूर्व जन्म के प्रेम और संस्कारों का वर्णन है।
* इसमें 5 चौपाई + 1 दोहा रखकर कड़वक बनाया गया है।
* इसमे बारहमासा का वर्णन **श्रावण मास** से आरंभ होता है।
* बनारसी दास जैन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है-

कब घर में बैठे रहे, नाहिन हाट बाज़ार।
मधुमालती, मृगावती, पोथी देऊ विचार।।

* **डॉ गणपति चन्द्र गुप्त-** हिन्दी प्रेमख्यानकों में नायक को बहुपत्नीक दिखाया गया है पर यह ग्रन्थ इसका अपवाद।

09- प्रेमविलास-प्रेमलता की कथा (1556 ई)

* रचयिता- जटमल (लाहौर)
* इस रचना का आरंभ जैनाय नमः से होता है।
* इसमें नायक-नायिका का प्रेम प्रत्यक्ष दर्शन से उत्पन्न है और फिर दोनों गुप्तरूप से विवाह कर लेते हैं।

10- चित्रावली (1613 ई)

* रचयिता- उस्मान (जहाँगीर के समकालीन)
* गुरु- हाजीबाबा (निजामुद्दीन चिश्ती के शिष्य)
* नायक- सुजान (नेपाल का राजकुमार)
* नायिका- चित्रावली (रूपनगर की राजकुमारी)
* इसमें बारहमासा का वर्णन **चैत मास** से आरंभ होता है।
* इसमें अंग्रेजों का उल्लेख मिलता है।
* इसमें मधुमालती का वर्णन है।

11- रस रतन (1618 ई)

* रचयिता- पुहकर कवि
* नायक- सोम
* नायिका- रम्भा

12- ज्ञानदीप (1619 ई)

* **रचयिता-** शेखनबी (जहाँगीर के समकालीन)
* **नायक-** ज्ञानदीप
* **नायिका-** देवयानी
* यह नायक प्रधान सूफ़ी काव्य है।
* इसमें स्वयंवर का वर्णन है।

13- हंस जवाहिर (1731 ई)

* रचियता- कासिम शाह (बाराबांकी निवासी)
* भाषा- ब्रजभाषा
* नायक- हंस
* नायिका- जवाहिर

14- इन्द्रवाती (1744 ई)

* रचयिता- नूर मुहम्मद (कवि नाम- कामयाब)
* नायक- राजकुँवर (कालिंजर का राजकुमार)
* नायिका- इन्द्रावती (आंगमपुर की राजकुमारी)
* आचार्य शुक्ल- इसे अन्तिम सूफ़ी रचना स्वीकार है।

15- अनुराग बाँसुरी (1764 ई)

* रचयिता- नूर मुहम्मद
* भाषा- संस्कृत निष्ठ अवधी
* इसमें चौपाई के साथ सवैया रखकर कड़वक बनाया गया है।
* नूर मुहम्मद सर्वाधिक कट्टरपंथी का शिकार हुये हैं, उन्हें मुस्लिम होकर हिन्दी भाषा में लिखने के कारण बार-बार अपने मुस्लिम होने का सबूत देना पड़ा है।-

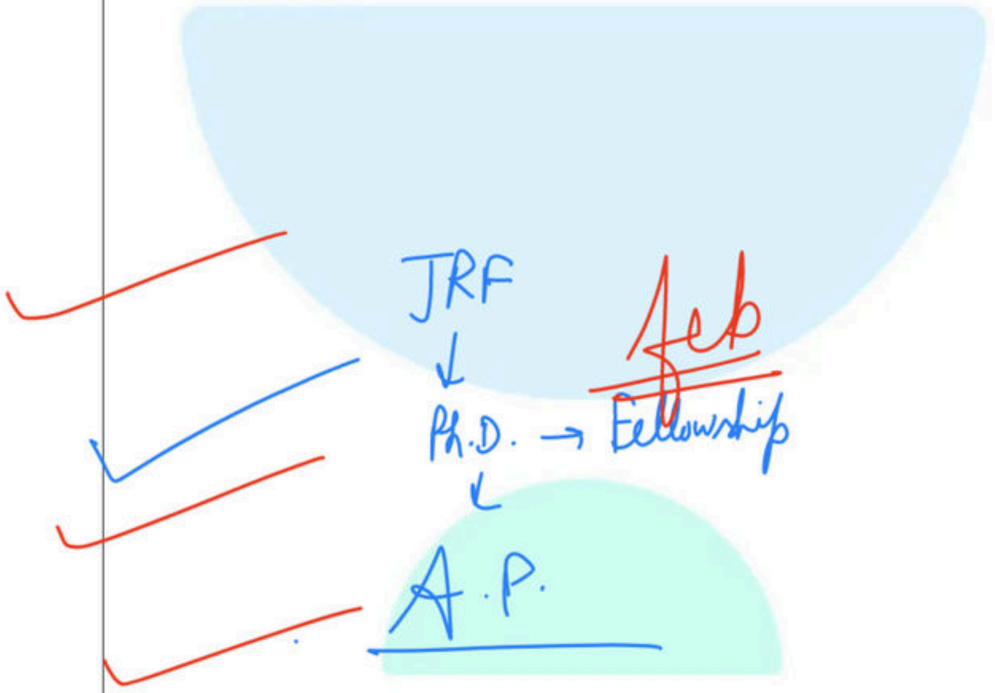
जानत है वह सृजनहारा, जो कुछ है मन मरम हमारा।
हिन्द मग पर पाँव न रखेहुँ, का जो बहुते हिन्दी भाखेउ।।

16- युसुफ़ जुलेखा (1790 ई)-

* रचना- शेख निसार (इस रचना में षड्ऋतु का वर्णन है।)
* वास्तविक नाम- गुलाम अशरफ

17- जान कवि (1612-1614 ई)- (कुल रचनायें- 78, सूफ़ी प्रेमाख्यानक- 29)

* भाषा- ब्रजभाषा मिश्रित राजस्थानी
* गुरु- शेख मुहम्मद चिश्ती
* कनकावती, कमलावती, रतनावती, कलावन्ती, कनकलता, दमयन्ती कथा, मोहिनी कथा, रूपमंजरी कथा, कलन्दर कथा, रत्नावली कथा, पजरशां सहजादे, लैं-लैं मजनू



unacademy

▲ 1 • Asked by Reena

Sir,

?

निष्पत्ति → मिलने से बनना

उत्पत्ति → जन्म होना